संतकम्मपंजिया

निबन्धन, प्रक्रम, उपक्रम और उदय इन पूर्वोक्त चार अनुयोगोंके ऊपर एक पंजिका भी उपलब्ध है जो इसी पुस्तक के 'परिशिष्ट' में दी गयी है। यह पंजिका किसके द्वारा रची गयी है, इसका कुछ संकेत यहाँ प्राप्त नहीं है। उसकी उत्थानिकामें यह बतलाया गया है कि 'महाकर्मप्रकृति प्राभृत' के जो कृति-वेदनादि २४ अनुयोगद्वार हैं उनमेंसे कृति और वेदना नामक दो अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वेदनाखंड (पु. ९-१२) में की गयी है। स्पर्श, कर्म, प्रकृति (पु. १३) और बन्धन अनुयोगद्वारके अन्तर्गत बन्ध एवं बन्धनीय (बन्धन अनुयोगद्वार चार प्रकारका है -- बन्ध, बन्धनीय, बन्धक और बन्धविधान) अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वर्गणाखंडमें की गयी है। बन्धन अनुयोगद्वारके अन्तर्गत बन्धविधान नामक अवान्तर अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा महाबन्धमें (महाबन्धके पाँच भाग 'भारतीय ज्ञानपीठ' द्वारा प्रकाशित किये जा चुके हैं। शेष भागोंके भी शीघ्र प्रकाशित हो जानेकी सम्भावना है।)

विस्तारपूर्वक की गयी है। तथा उक्त बन्धन अनुयोगद्वारके अवान्तर अनुयोगद्वारभूत बन्धक अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा क्षुद्रकबन्ध (पृ. ७) में विस्तारसे की गयी है। शेष १८ अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा सत्कर्ममें की गयी है। तथापि उसके अतिशय गम्भीर होनेसे यहाँ अर्थविषमपदोंके अर्थकी प्ररूपणा पंजिकास्वरूपसे की जाती है। (महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदि-वेदणाओ (इ) चउवीसमणुयोगद्दारेसु तत्थ कदि-वेदणा त्ति जाणि अणुयोगद्दाराणि वेदणाखंडम्मि, पुणो प (पस्स-कम्म-पयडि-बंधण त्ति) चत्तारिअणुओगद्दारेसु तत्थ बंध-बंधणिज्जणामाणुयोगेहि सह वग्गणाखंडम्मि, पुणो बंधविधाणणामाणुयोगद्दारो महाबंधम्मि, पुणो बंधगाणुयोगो खुद्दाबंधम्मि च सप्पवंचेण परूविदाणि। पुणो तेहिंतो सेसट्ठारसाणुयोगद्दाराणि संतकम्मे सव्वाणि परूविदाणि। तो वि तस्साइगंभीरत्तादो अत्थविसमपदाणमत्थे थोरुच्चयेण पंजियसरूवेण भण्णिस्सामो। परिशिष्ट पृ. १)

इससे यह निश्चित होता है कि प्रस्तुत मूलभूत षट्खंडागममें कृति-वेदनादि पूर्वोक्त २४ अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम छह अनुयोगद्वारोंकी ही प्ररूपणा की गयी है। शेष निबन्धन आदि १८ अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा श्री वीरसेन स्वामीने स्वयं ही की है, जैसे कि उन्होंने उसेके प्रारम्भमें इस वाक्य के द्वारा सूचित भी कर दिया है --

भूदबलिभडारएण जेणेदं देसामासियभावेण लिहिदं तेणेदेण सुत्तेण सूचिदसेसअट्ठारसअणुयोगद्दाराणं किंचि संखेवेण परूवणं कस्सामो। तं जहा --

उक्त 'संतकम्मपंजिया' की उत्थानिकामें की गयी सूचनाके अनुसार तो वह शेष सभी १८ अनुयोगद्वारोंके ऊपर लिखी जानी चाहिये थी। परन्तु उपलब्ध वह उदयानुयोगद्वार तक ही है।

इसकी जो हस्तलिखित प्रति हमारे सामने रही है वह श्री. पं. लोकनाथजी शास्त्रीके अन्यतम शिष्य श्री. देवकुमार जी के द्वारा मूडबिद्रीस्थ श्री. वीरवाणीविलास जैन सिद्धान्त भवनकी प्रतिपरसे की गयी है। वह प्रायः अशुद्ध बहुत है। इसमें लेखकने पूर्णविराम, अर्धविराम और प्रश्नसूचक आदि चिन्होंका भी उपयोग किया है जो यत्र तत्र भ्रान्तिजनक भी हो गया है।

पंजिकामें जहाँ भी अल्पबहुत्व का प्रकरण प्राप्त हुआ है उसीके ऊपर प्रायः विशेष लिखा गया है, अन्य विषयोंका स्पष्टीकरण प्रायः कहीं भी विशेषरूपसे नहीं किया गया है। यहाँ पंजिकाकारने जो संख्याओंका उपयोग अल्पबहुत्वके स्पष्टीकरणार्थ किया है वह किस आधारसे किया है, यह समझमें नहीं आ सका है। इसमें प्रायः सर्वत्र अस्पष्ट स्वरूपेसे एक विशष चिन्ह आया है जो प्रायः संख्यातका प्रतीक दिखता है। उसके स्थानमें हमने अंग्रेजीके (2) के अंक का उपयोग किया है।